विद्यालङ्कार (B.A. SANSKRIT HONS.) संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम

विद्यालङ्कार [B.A.(Hons.) Sanskrit]

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र हेतु संस्कृतविषयक विस्तृत पाठ्यक्रम

Detail of the Core Course for Sanskrit

सत्र- षष्ठ Semester –VI

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र	**आयुर्वेद के मूल सूत्र**	**पूर्णाङ्क -100**
(DSE- Paper)	**Fundamentals of Aayurveda**	**सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper Code HSA-E613		**आन्तरिक परीक्षा-30**
		सकल-अर्जिताधिभार 06

पाठ्यक्रम (Course)

खण्ड- क (Section- A) आयुर्वेद का परिचय

खण्ड- ख (Section-B) चरकसंहिता (सूत्रस्थान)

खण्ड- ग (Section- C) तैत्तिरीयोपनिषद्

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

5000 वर्ष ईस्वी पूर्व में अन्वेषित की गई स्वास्थ्य संरक्षण की भारतीय परम्परा, जिसे कि हम आयुर्वेद के नाम से जानते हैं, स्वास्थ्य संरक्षण की पद्धतियों में महत्त्वपूर्ण है। कक्षा में दिए गए व्याख्यानों और चर्चा के माध्यम से यह पाठ्यक्रम छात्रों को आयुर्वेद के सिद्धान्तों का परिचय देगा। आयुर्वेद के सिद्धान्तों को इस पाठ्यक्रम में जिस प्रकार प्रस्तुत किया गया है, वे विद्यार्थियों के लिए उनके दिन प्रतिदिन के जीवन हेतु पूर्ण, व्यापक और उपयोगी हैं। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्तों और औषधीय निवारक उपाय तथा स्वास्थ्य संरक्षण एवं आहार और पोषण के साथ-साथ आयुर्वैदिक चिकित्सकीय प्रक्रिया में सामान्य रूप से प्रयुक्त मसालों एवं जड़ी बूटियों तथा आयुर्वैदिक रूपरेखा को प्रत्यक्ष रूप देना है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस के अध्ययन से छात्र शारीरिक एवं मानसिक रूपेण स्वस्थ रहने के लिए अधीतविद्य हो जायेंगे।
2. क्या खाद्य है और क्या अखाद्य? इसका पूर्ण परिज्ञान होने एवं जीवन में धारण करने से कदाचित् ही रोगी होंगे।
3. तैत्तिरीयोनिषद् के अध्ययन से प्राचीन शिक्षा के महत्त्व से परिचित हो अध्यात्मशील भी होंगे।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)

आयुर्वेद का परिचय

घटक-क (Unit-1) आयुर्वेद का परिचय, चरक से पूर्व भारतीय चिकित्सा का इतिहास, आयुर्वेद के दो सम्प्रदाय : धन्वन्तरि और पुनर्वसु।

घटक-ख (Unit-2) आयुर्वेद के मुख्य आचार्यः चरक, सुश्रुत, बाग्भट्ट, माधव, शारङ्गधर, भावमिश्र।

खण्ड – ख (Section–B)

चरकसंहिता (सूत्रस्थान)

घटक-क (Unit-1) षड् ऋतुओं - हेमन्त, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद में शरीर और प्रकृति की स्थिति, षड् ऋतुओं- हेमन्त, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद में पथ्यापथ्य।

खण्ड – ग (Section–C)

तैत्तिरीयपनिषद्

घटक-क (Unit-1) तैत्तिरीयोनिषद्, भृगुवल्ली अनुवाक १-५

घटक-ख (Unit-2) तैत्तिरीयोनिषद्, शिक्षावल्ली

प्रश्नपत्र निर्माण-प्रारूप-

खण्ड ख के अन्तर्गत सभी खण्डों से विकल्प के साथ कुल पांच समालोचनात्मक /व्याख्यात्मक प्रश्न प्रष्टव्य रहेंगे। अंक 05x6= 30

खण्ड ग के अन्तर्गत सभी खण्डों से विकल्प के साथ कुल चार समालोचनात्मक /व्याख्यात्मक दीर्घोत्तरीय प्रश्न प्रष्टव्य होगें। अंक 04x10= 40

टिप्पणी खण्ड ख में से दो प्रश्नों तथा ग में से एक प्रश्न का उत्तर **संस्कृत** में करना अनिवार्य होगा।

अनुशंसित ग्रन्थ (Suggested Books/Readings)

1. Brahmananda Tripathi (Ed.) , Carakasamhitā, Chaukhamba Surbharati Prakashana, Varanasi,2005.
2. Taittiriyopanisad–Bhiguvalli.
3. Atridev Vidyalankar, Ayurveda ka BrhaditiHSAa.
4. Priyavrat Sharma, CarakaChintana.

V.Narayanaswami,OriginandDevelopmentofĀyurveda(Abriefhistory) ,Ancient Science of life, Vol. 1, No. 1, July 1981, pages1-7.